हिंदी सिनेमा में रोजगार के अवसर

प्रा.रवींद्र पुंजाराम ठाकरे
अध्यक्ष स्नातकोत्तर हिंदी विभाग,
समाजश्री प्रशांतदादा हिरे कला, विज्ञान एवं
वाणिज्य महाविद्यालय नामपुर,
ई मेल :- ravipthakare@gmail.com

प्रो. डॉ. अनिता नेरे
विभागाध्यक्ष एवं शोध निर्देशक,
श्रीमति पुष्पाताई हिरे महिला
महाविद्यालय, मालेगांव कैंप (नाशिक)
ईमेल-anitanere321@gmail.com

वर्तमान युग वैज्ञानिक युग है। विज्ञान ने आज मानव को विविध आधुनिक आविष्कार इजाद किये हैं। विज्ञान की अद्यतन सुविधाओं की खोज के कारण मानव जीवन सरल,सहज एवं सफल हो गया है। विज्ञान के परिष्कार के कारण ही 'वसुदैव कुटुंबकम' की संकल्पना साकार हो सकी है। विज्ञान के नए पुराने विविध क्षेत्रीय आविष्कार मानव सभ्यता एवं संस्कृति,रहन-सहन, भौतिक सुविधाओं आदि में दिन दुगना रात चौगुना इजाफा कर रहे हैं। विज्ञान ने न केवल मानव की बुद्धि का विस्तार कर उसकी वैचारिक शक्ति को नये आयाम दिये हैं बल्कि विश्व समुदाय के मध्य भौगोलिक दूरी को भी कम किया है। यह विज्ञान की ही देन है कि आज भावात्मक और बौद्धिक दोनों ही स्तरों पर विश्व परस्पर निकट आ गया है। इस निकटता में सिनेमा की भूमिका अग्रणी है। जनसंचार माध्यमों में सिनेमा सबसे लोकप्रिय माध्यम है। मनोरंजन के लिए अमीर-गरीब सभी लोग सिनेमा को प्राथमिकता देते हैं । पिछले कई दशकों से सिनेमा हमारे जीवन का हिस्सा बना हुआ है। सिनेमा के माध्यम से जनसमुदाय की सुखद एवं दुखद भावनाओं को साकार किया जा रहा है। सिनेमा सूक्ष्म मानवीय संवेदनाओं, मानवीय व्यवहारों के विभिन्न पहलुओं को चित्रात्मक शैली में अभिव्यक्त करता है। इसके अतिरिक्त सिनेमा आज सर्वाधिक रोजगार उपलब्धि का माध्यम भी है। भारत की राष्ट्रभाषा,राजभाषा और जनभाषा हिन्दी है,अत:सिनेमा के क्षेत्र का प्रतिनिधित्व भी हिन्दी भाषा ही करती है। बालीवुड में बननेवाली हिन्दी फिल्में और उनका वार्षिक लेखा-जोखा इतना विशाल है,जितना किसी छोटे देश का पूरा वार्षिक बजट होता है।हिन्दी सिनेमा की लोकप्रियता का अंदाजा इस बात से भी लगाया जा सकता है,कि अच्छी फिल्में भारत साहित विश्व के 22 देशों के महत्वपूर्ण थिएटर्स,मल्टीप्लेक्स में एक साथ रिलीज होती है तथा अच्छी कमाई करती है । 'थ्री इडियट्स' इसका सुंदर उदाहरण है। आज भारत का फिल्म उद्योग अपने चरम पर है। लाखों लोगों की रोजी-रोटी और रोजगार प्रत्यक्षत: इससे जुड़े हुए हैं।

फिल्म उद्योग में हिन्दी भाषा का अध्ययन एवं अनुसंधान करनेवालों के लिए उपलब्ध रोजगार के विषय में कहे तो कहा जा सकता है कि,इसमें रोजगार के अनगिनत अवसर है। सिनेमा रोजगार के लिए अलीबाबा की गुहा है। "सिनेमा में साहित्य,संगीत,नृत्य,रंगसज्जा,स्थापत्य आदि का सम्मिलित रूप होता है। सिनेमा में मानवीय जीवन की विविध झाकियाँ दृश्यमान होती है। प्रत्येक व्यक्ति अपनी -अपनी दृष्टि से अपने-अपने जीवन की झलक उसमें देखता है और मनचाहा रोजगार भी पाता है"।[1] वैसे तो सिनेमा अन्य माध्यमों से नितांत भिन्न है। फिल्म निर्माण एक टीम वर्क है,जिसमें निर्देशक, निर्माता, अभिनेता,अभिनेत्री,सहायक

Scanned with CamScanner

पात्र,संवाद लेखक,पटकथा लेखक, गीतकार, फोटोग्राफर,संपादक,ध्वनि रेकार्डर,संगीतकार तथा अन्य सहायक व्यक्ति कार्य करते हैं। फिल्म निर्माण के लिए कार्य करनेवाले प्रत्येक व्यक्ति के लिए रोजगार की व्यापक गुंजाइस रहती है।

सिनेमा के क्षेत्र में रोजगार प्राप्त करनेवाला हिन्दी साहित्य का अध्येता पटकथा लेखक,संवाद लेखक,गीतकार तथा अभिनेता या अभिनेत्री बन सकता है। डॉ.अर्चना गौतम सिनेमा में रोजगार के अवसरों का विवरण देती हुई लिखती हैं,-"यदि किसी छात्र में कहानी लिखने की प्रतिभा है तो वह पटकथा लेखन के क्षेत्र को चुन सकता है। किन्तु फिल्म की कहानी अथवा पटकथा में कल्पनातीत नयापन होना आवश्यक है। पटकथा लिखना तैयार फिल्म का सपना देखकर उसे कागज पर अंकित करने जैसा होता है"।[2] पटकथा लेखक के पास ही असाधारण घटनाओं को ढूंढने की क्षमता होनी चाहिए।पटकथा लेखन में अच्छा पैसा और नाम कमाया जा सकता है। भरत व्यास,राजेंद्र कृष्ण, कमलेश्वर ,सलीम खान,जावेद अख्तर,गुलजार,प्रसून जोशी,राजकुमार हिरानी,कमलेश पाण्डे, आदि कई ऐसे पटकथा लेखक हैं,जिन्होंने हिन्दी सिनेमा जगत में अच्छा रोजगार और प्रसिद्धि प्राप्त की है।

हिन्दी फिल्मों में रोजगार पाने हेतु आज भी छोटे- बड़े कस्बों से लेकर बड़े शहरों तक से युवा पीढ़ी मुंबई की और रुख कर रही है। लाखों लोगों की भीड़ में से कुछ ही इज्जत,शोहरत और धन कमा पाते हैं।लेकिन शेष लोग भी रोजी-रोटी पा ही जाते हैं।

इसी तरह फिल्मों में गीत लेखन का कार्य करने पर भी अच्छा रोजगार प्राप्त हो सकता है। इसके लिए गीत लेखन की कला अवगत होनी चाहिए। "फिल्मी गीत लिखने की एक तकनीक होती है। कभी-कभी गीतकार को दृश्य के अनुसार गीत लिखने होते हैं,तो कभी प्रसंग के अनुसार। तैयार की गई धुनों के अनुसार वाक्यों को ढालकर गीतों का निर्माण किया जाता है। भारतीय सिनेमा में गीतकार को अच्छा रोजगार उपलब्ध है,बशर्ते उसमें मौलिक प्रतिभा होनी चाहिए"।[3] जिनका भाषा पर अच्छा अधिकार है वे फिल्म के समीक्षक बन सकते हैं। फिल्मों में लाखों- करोड़ों रुपयों की लागत होती है। अत: व्यक्ति अपनी मौलिक प्रतिभा के बल पर फिल्मों को सूक्ष्मता से समझने,कलात्मक ढंग से लिखने के कौशल को अपनाकर अच्छा पैसा और नाम कमा सकता है।

हिन्दी सिनेमा में अन्य जगहों पर भी बहुत पैसा कमाया जा सकता है। फिल्म के साथ-साथ विज्ञापन फिल्में,टी.वी.सीरियल, डाक्यूमेंट्री तथा कार्टून फिल्में,वीडियो गेम का व्यापार भी हिन्दी जगत से जुड़े लोगों के लिए रोजगार का एक नया द्वार खोल रहा है। वास्तव में भारत की आबादी विश्व का एक बड़ा बाजार है। यहाँ पर मनोरंजन के समस्त संसाधन निम्न स्तर से लेकर उच्च स्तर के लोगों में खप जाते हैं । जो जितना कमाता है वह उसी स्तर का मनोरंजन खरीदता है। इसीलिए यहाँ एक-से-एक अच्छी फिल्म,चाहे वह कला फिल्म हो, हरार फिल्म हो,कामेडी हो,फूहड़ हो चल जाती है, दर्शक मिल ही जाते हैं। इसी प्रकार सैकड़ों टी.वी.चैनल रोज खुल रहे हैं और उनको देखने के लिए भी दर्शक मिल जाते हैं। "पहले केवल समाचारों के लिए दूरदर्शन चैनल पर निर्भर रहने वाले दर्शक आज हजारों समाचार चैनलों को हर क्षण बदलकर देख रहे हैं । 'स्टार न्यूज', 'आज तक', 'डिस्कव्हरी' आदि चैनलों की लोकप्रियता अधिक है । आज भी हिन्दी दर्शक अपनी शान के साथ हिन्दी फिल्मों से अपना रिश्ता जोड़े हुए हैं, तबतक हिन्दी कलमकारों से लेकर हिन्दी कलाकारों तक को रोजगार की कमी नहीं होगी"। [4]

निष्कर्ष:-

इस प्रकार सारांश रूप में कहा जा सकता है,कि हिन्दी में विशेष कौशल प्राप्त करनेवाले व्यक्तियों के लिए सिनेमा जगत में रोजगार के अनंत अवसर उपलब्ध हो सकते हैं। अभिनय,पटकथा लेखन,संवाद लेखन,गीत लेखन, हिंदीतर भाषियों की फिल्मों का हिन्दी में डबिंग हेतु संवाद लेखन,डिस्कव्हरी जैसे चैनलों के लिए हिन्दी

Scanned with CamScanner

का मार्मिक उपयोग किया है। उनके काव्य में इतनी शक्ति है कि वह भारत माँ को गुलामी की जंजीरों से आजाद कर सके। जन मानस में आजादी की चेतना भरने की क्षमता उनकी कविता में यत्रतत्र विद्यमान है। डॉ. उमाकांत गोयल ने 'हिंदी साहित्य कोश' में ठीक ही लिखा है- "भारतीय संस्कृति के प्रवक्ता के साथ ही मैथिलीशरण जी राष्ट्रीय कवि भी हैं। इनकी प्रायः सभी रचनाएँ राष्ट्रीयता से ओत प्रोत हैं।"11 तात्पर्य यह है कि मैथिलीशरण गुप्त का काव्य स्वाधीनता आन्दोलन में शास्त्र और शस्त्र की तरह उपयुक्त सिद्ध हुआ है । आधुनिक काल में राष्ट्रीय भावना को अग्रसर करने का महत्तर कार्य कवि गुप्तजी ने ही किया है।

संदर्भ:

1. सम्मलेन पत्रिका- सन 1909, पृ. 25
2. भारत-भारती, मैथिलीशरण गुप्त, पृ.11
3. हिंदू, मैथिलीशरण गुप्त, पृ.88
4. साकेत, मैथिलीशरण गुप्त, पृ.355
5. वाही, पृ. 234
6. गुरुकुल,मैथिलीशरण गुप्त, पृ. 130
7. काबा और कर्बला, मैथिलीशरण गुप्त , पृ. 66
8. भारत-भारती, मैथिलीशरण गुप्त, पृ. 66
9. विश्ववेदना, मैथिलीशरण गुप्त , पृ. 37
10. गुरुकुल, मैथिलीशरण गुप्त ,पृ.12
11. हिंदी साहित्य कोष, भाग -2, सम्पा.धीरेंद्र वर्मा

Scanned with CamScanner